IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भूमंडलीकरण और सांस्कृतिक संकट

(अलका सरावगी के उपन्यासों के संदर्भ में)

इफ्फत मेहदी

शोधार्थी ,अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय।

सारांश: भारत में भूमंडलीकरण को खुली अर्थव्यवस्था, उदारीकरण, निजीकरण और नई आर्थिक नीति के संदर्भ में ही देखा गया। भारत के बाजार को बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए खोला गया जिससे रोजगार के अवसर उच्च तकनीकी और प्रबंधन के पदों पर बढ़े परंतु इसने दलितों, पिछड़े वर्गों, स्त्रियों, मजदूरों,ट्रेड यूनियनों, पर्यावरण के हितों को नुकसान भी पहुंचायाँ। पश्चिम की आयातित तकनीकी और आर्थिक सहायता अपने साथ वहां की जीवन शैली और मूल्य भी लेकर आई जिसने भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया।भूमंडलीकरण वर्तमान समय की औद्योगिकरण,शहरीकरण,आधुनिकीकरण की ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कंप्यूटर और मोबाइल पर उपलब्ध इंटरनेट सुविधा द्वारा वैश्विक स्तर पर व्यापार-व्यवसाय के लिए राष्ट्रों को एक-दूसरे से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के लिए विवश कर दिया है।आर्थिक हितों के लिए की गई इस व्यवस्था ने राष्ट्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र भी प्रभावित हुए । उपन्यास साहित्य में इन प्रभावो को सशक्त अभिव्यक्ति देने का कार्य उपन्यासकार कर रहे हैं। अलका सरावगी का उपन्यास साहित्य इस क्रम में महत्वपूर्ण हैं।

भूमंडलीकरण,बाज़ारवाद,ऋण,प्रदर्शन,पर्यावरण संकट, आत्महत्या।

भूमंडलीकरण, पूंजी और व्यापार के लिए अपने राष्ट्र राज्यों की सीमाओं से बाहर जाकर निवेश करने की प्रक्रिया है जिसके केंद्र में आर्थिक स्वार्थ है। अपने उत्पादों और सेवाओं के लिए बाजार की तलाश ने राष्ट्रों को एक दूसरे से अधिकाधिक अंतरसंबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। बुद्धिजीवियों ने माना कि यह प्रक्रिया भूमंडल के कुछ शक्तिशाली समूह और देशों की आर्थिक नीति है। भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, ग्लोबलाइजेशन, आदि इसके सर्वस्वीकृत शब्द हैं। भारत में भूमंडलीकरण के आरंभ को अभय कुमार दुबे ने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है,"24 जुलाई 1991 को जो सुबह आई उसने एक नई उद्योग नीति की घोषणा की और बने बनाए ढ़ाँचे को एक ही झटके में कुछ अवशेषों में बदल दिया। इसी दिन दोपहर के बाद संसद में नया केंद्रीय बजट पेश किया गया जिसमें एक ऐसे अर्थतंत्र का आकार बनना शुरू हुआ जो राजनीति से नियंत्रित होने के बजाय उसे नियंत्रित करने

की इच्छा से लैस था। चार दशक से ज्यादा की अवधि में जो राष्ट्रीय राजनीतिक-सामाजिक संस्कृति की रचना हुई थी, एक पल में उसकी बागडोर ऐसे हाथों में चली गई जो शुद्ध रूप से भारतीय हाथ नहीं थे। यह भारत के ग्लोबलाइजेशन यानी भूमंडलीकरण की शुरुआत थी।"[1] इस राजनीतिक फैसले ने भारतीय समाज के सांस्कृतिक-सामाजिक ढांचे को भी प्रभावित किया। भूमंडलीकरण की इस प्रक्रिया से सब लाभान्वित तब होते जब मानवता के हित के लिए विश्व के समस्त देशों की संस्कृति, उनके विचार, ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान होता परंतु, मुक्त बाजार के फैसले का अर्थ समाजवादी अर्थनीति और उसके साथ सामाजिक न्याय और समता के मूल्य की उपेक्षा करना भी था। यह प्रक्रिया पश्चिमीकरण बल्कि अमेरीकीकरण बनकर रह गई। भूमंडलीकरण को अमेरिकीकरण मानने का कारण यह है कि इसके मुख्य घटक अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष,विश्व बैंक,विश्व व्यापार संगठन,बहुराष्ट्रीय कंपनियां आदि के मुख्यालय अमेरिका के वाशिंगटन डी.सी. में ही केंद्रित हैं।यहीं से पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित होती हैं।अमेरिका अपनी वित्तीय,सैन्य और प्रौद्योगिकी-तकनीकी शक्तियों का प्रयोग कर विश्व की अजेय शक्ति का रूप प्राप्त कर चुका है। कंप्यूटर और मोबाइल के क्षेत्र में क्रांतिकारी उन्नति और इंटरनेट जैसी सुविधा ने राष्ट्रों की भौगोलिक दूरी को समाप्त कर उन्हें एक क्लिक में संपर्क में ला दिया।कंप्यूटरकृत संचार तंत्र ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की।

जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं बचा है जो भूमंडलीकरण से प्रभावित न हुआ हो, तो साहित्य कैसे इससे अछूता रह जाता। हिंदी कथा साहित्य में उपन्यास विधा को अपने विराट फलक के कारण जीवन के पल-पल के भाव-भर्गिमा को व्यक्त करने की सुविधा प्राप्त रहती है। भारतीय इतिहास में उपन्यास साहित्य ने उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समय के अनुरूप उपन्यास के कथ्य और शिल्प में भी उत्तरोत्तर विकास होता रहा। जहां स्वतंत्रता से पूर्व उपन्यास साहित्य के कथ्य का केंद्र ब्रिटिश शासन से मुक्ति था वहीं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को विकास के पथ पर अग्रसर होने के लिए समाज में व्याप्त बुराइयों के कारण और निवारण को विषय वस्तु बनाया गया। पूंजी और तकनीकी की कमी के साथ नए आजाद देशों को विकास के लिए बड़ी मात्रा में विदेशी पूंजी के निवेश की आवश्यकता को नकारना असंभव लगा। सोवियत संघ के विघटन के बाद राष्ट्रीय सरकारों को विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आदेशों के अनुरूप अपने देश के लिए नीतियाँ निर्धारित करनी पड़ी।

उपन्यास साहित्य के विकास क्रम में महिला रचनाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में रण क्षेत्र से लेखन कार्य तक वे अपनी भूमिका बखूबी निभाती रहीं। अलका सरावगी 21वीं सदी की उन चर्चित उपन्यासकारों में से हैं जिन्होंने हिंदी उपन्यास साहित्य को मौलिक कथ्य और अनुठे शिल्प से समृद्ध किया।अपनी प्रथम और 'साहित्यिक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित औपन्यासिक कृति 'कलिकथा:वाया बाईपास' (1998) के द्वारा भूमंडलीकारण के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में आए सांस्कृतिक और सामाजिक यथार्थण को सशक्त अभिव्यक्ति देने का श्रेय भी प्राप्त किया।

अलका सरावगी का समग्र साहित्य भूमंडलीकरण के विभिन्न पक्षों का उजागर करता है। अलका जी के प्रकाशित आठ उपन्यास-'कलि-कथा: वाया बाईपास'(1998),शेष कादंबरी(2004),कोई बात नहीं(2004),एक ब्रेक के बाद(2008),जानकीदास तेजपाल मेनशन(2015),एक सच्ची-झूठी गाथा(2018),कुलभूषण का नाम दर्ज

कीजिए(2020),गांधी और सरलादेवी चौधरानी:बारह अध्याय(2023)हैं।इनमें से अंतिम उपन्यास की विषयवस्तु गांधी जी के पितृसत्तात्मक रूप पर है। भूमंडलीकरण के विभिन्न पक्षों की दृष्टि से आरंभ के सात उपन्यास विशेष हैं।

'कलि: कथा वाया बाईपास' उपन्यास भूमंडलीकरण के प्रभाव के कारण नब्बे के दशक में विकसित उपभोक्तावादी, बाजारवादी संस्कृति पर सोचने-विचारने के लिए विवश करता है। भूमंडलीकरण से बाजार और उन्मुक्त उपभोग की संस्कृति को बढ़ावा मिला है। बाजार ने जिस प्रकार से भारतीय जनजीवन को प्रभावित किया उसके स्पष्ट प्रमाण हमें इस उपन्यास में मिल जाते हैं।उपन्यास के मुख्य पात्र किशोर बाबू की बाईपास सर्जरी के बाद दुनिया को देखने का नजरिया बदल गया था। किशोर बाबू सड़क पर पैदल चलनेवालों को हमेशा हिकारत की दृष्टि से देखते थे,वही बाईपास सर्जरी के बाद सड़कों पर घूमते-घूमते स्वयं 'सड़कमाप' व्यक्ति बन गए थे। बाईपास सर्जरी के बाद उनकी बातों में संगति नहीं रह गई थी।वह अक्सर बदहवासी ,विस्मृति ,पागलपन जैसी दशा में वर्तमान को अपने अतीत से जोड़ लेते थे।वास्तव में लेखिका ने यथार्थ और फेंटेसी को जोड़कर एक अनूठे शिल्प द्वारा उपभोक्तावादी,बाजारवादी संस्कृति से प्रभावित मध्यवर्गीय व्यक्ति की स्थिति को चित्रित किया है जो नैतिक मूल्यों का पतन होते हुए देख रहा है परंतु विरोध नहीं कर पा रहा।उपन्यास के मुख्य पात्र किशोर बाबू इसके सर्वाधिक दृष्टा ,भोक्ता और पीड़ित हैं।किशोर बाबू के सुपरवाइजर मित्रा साहब की नौजवान सुंदर लड़की ने अपने पुरूष मित्र के साथ शहर के सबसे महंगे 'बुटिक' से जिस प्रकार खरीदारी की वह इसी प्रवृति का उदाहरण है,"किशोर बाबू ने कनखियों से देखा कि लड़की ने बीसेक ड्रेसें अपने ऊपर लगा-लगाकर लड़के को दिखाते हुए तीन ड्रेसें छाँट ली हैं। बिल बना आठ हजार रुपयों का।अब मित्रा साहब की लड़की मुग्ध निगाहों से लड़के को देखती हुई झूमती हुई कपड़ों का पैकेट लिए सीढ़ियां उतर रही थी।-यह अब कहां जाएगी? इस लड़के को को इन कपड़ों का क्या मुआवजा देगी? ऐसा क्या अकाल पड़ा था इसके जीवन में इन कपड़ों के बिना? किशोर बाबू का दिमाग एक के बाद एक उठते प्रश्नों से भनभनाकर दुखने लगा। कैसा अ-समय आ गया है? क्या यही कलयुग है?"[2]अपनी अनियंत्रित इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए मनुष्य किस स्तर तक गिर सकता है।इससे समझा जा सकता है। आर्थिक समृद्धि और उन्मुख उपभोग की होड़ में व्यक्ति साधनों का मूल्यांकन करना भी भूलता जा रहा है और उसका नतीजा सामाजिक नैतिकता के अवमूलन के रूप में सामने आता है।

इसी प्रकार की प्रवृत्ति का चित्रण अलका जी के उपन्यास,' एक ब्रेक के बाद' में भी कई स्थानों पर हुआ है। सत्य,ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा जैसे आदर्शों पर चलने वाले व्यक्ति,भूमंडलीकरण के दौर में एक निरर्थक वस्तु के समान है।उपन्यास के मुख्य पात्र के.वी.अय्यर ने अपने मित्र रंगनाथन के आदर्शों के बारे में अपने विचार इस प्रकार से व्यक्त करते हैं,"वे कोई अर्थपिशाच नहीं बनें हैं।सिर्फ ज़माने से तालमेल मिलाकर चल रहे हैं।हर जगह खोखला,बासी,गंघ मारते आदर्शों की दुहाई देना एक तरह की हरमजदगी है,पाखंड है।हमारा इंडिया विकास के पथ पर बढ रहा है। उसके रास्ते में जो भी पत्थर आएंगे,उन्हें हटाना हमारा कर्तव्य है।"[3] भूमंडलीकरण के फलस्वरूप मनुष्य सामाजिक प्राणी से आर्थिक प्राणी बनता जा रहा है। अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए वह समाज सभ्यता संस्कृति आदि के मूल्यों को भी अनदेखा कर रहा है। उपन्यास में के.वी.अय्यर ऐसे ही चरित्र का प्रतिनिधित्व करते नजर आते हैं।

भूमंडलीकरण ने वर्तमान समय में 'मनुष्य और मुनाफा' में मुनाफे को केंद्र बिंदु बना दिया है। बाज़ारवादी ताकतों ने राष्ट्र-राज्यों को निरंतर कमजोर किया। उन्हें अपने इशारों पर चलने के लिए मज़बूर किया। उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' कारॅपोरेट जगत की इस कटु सच्चाई को उधाड़ता है।बड़ी-बड़ी कंपनियों के मुनाफे के आगे गरीब-लाचार मज़दूरों के जीवन का कोई मूल्य नहीं हैं।गुड़गांव में होंडा कंपनी के मजदूरों पर पुलिस के लाठीचार्ज की घटना का उल्लेख उपन्यास में करके लेखिका ने के.वी.अय्यर जैसे लोगों की मानसिकता को उजागर करती है जो कारॅपोरेट कंपनियों की व्यवस्था और विवशता को उचित ठहराते हैं," पुलिस को मजदूरों पर इस तरह अत्याचार करते देख तकलीफ तो होती है, पर देश की भलाई में 'कोलेटेलर डैमेज' यानी छोटे-मोटे अनुषंगिक नुकसान तो उठाने ही होंगे।"[4]औद्योगिक-व्यापारिक मुनाफे के आगे मनुष्य गौण हो जाता है। वैश्वीकरण की नीति के अनुसार उपयोगी मनुष्य और वस्तुएं-गैर मानव तत्व जो मुनाफे के लिए उपयोगी होगा,उसी का अस्तित्व रहेगा।उसके अतिरिक्त वस्तुओं और मनुष्य को उच्छिष्ट मानकर बाहर निकाल दिया जाता है।

भूमंडलीकरण की अर्थव्यवस्था के अंतर्गत उदारीकरण और खुली बाजार की नीतियों के कारण और व्यवसाय जगत के विस्तार के लिए आवश्यक संसाधन और संरचना बनाने के लिए विकास और उन्नति के नाम पर सरकार की सेज(स्पेशल इकोनामिक जोन) नीति का उपयोग कर किसानों-आदिवासियों से उनकी जमीन को छीनने के लिए कंपनियों की क्रूरता का चित्रण भी 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में लेखिका ने मार्मिकपूर्ण रूप से किया है," xxxगुरुचरण ने उसे गांव की केस स्टडी इस मकसद से की थी कि वह अपनी कंपनी को रास्ता दिखा सके। यही तरीका है मूर्खों से निपटने का।अपनी दो कौड़ी की जमीन से चिपके रहेंगे। दो कौड़ी की फसल उगाएँगे।कर्ज हो जाएगा तो आत्महत्या कर लेंगे। पर देश का विकास नहीं होने देंगे। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया है कि सरकार कहीं पर भी देश के हित के लिए जमीन ले सकती है इस तरह की जमीन सरकार की संपत्ति हो सकती है।"[5]गुरुचरण उपन्यास का दूसरा मुख्य पात्र है।वह अपनी मल्टीनेशनल कंपनी के लिए मध्य प्रदेश में डेढ़ साल पहले खरीदी गई खदानों के बारे में रिपोर्ट तैयार कर रहा था और वहां के आदिवासियों में बहुत लोकप्रिय भी था। अपनी कंपनी की नीतियों से वह परिचित था। इसीलिए उसने आदिवासियों का साथ दिया और कंपनी को खबर किए बिना वहां से गायब हो जाता है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरुप बड़े उद्योगपतियों- कंपनियों द्वारा ग़रीबों-मजदूरो प्रति इस प्रकार के दृष्टिकोण से गुरुचरण जैसे व्यक्ति दुखी तो हैं परंतु उनके पास अभी कोई समाधान नहीं है। उसमें पलायन की प्रवृत्ति है। अक्सर ऐसी दुविधापूर्ण स्थितियों से बचने के लिए वह पहाड़ों पर घूमने चला जाता था। लेखिका स्वयं वर्तमान की इस प्रकार की स्थिति से दुखी है।इसी कारण उपन्यास के अंत में गुरुचरण की आकस्मिक मृत्यु प्रकृति की गोद में होती है। पर्यावरण संरक्षण का वैश्विक विचार कंपनियों के मुनाफे के आगे छोटा पड़ जाता है। सरकारों की इस दोगलेपन की नीति का चित्रण उपन्यास में बहुत ही कुशलता से किया गया है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में पर्यावरण के संरक्षण को अनदेखा कर दिया गया। वर्तमान समय में पृथ्वी के तापमान की वृद्धि अंधाधुन वनों की कटाई, पहाड़ों पर निर्माण कार्य ,नदियों पर बांध बनाने आदि विकास के नाम पर अपनाई गई नीतियों का परिणाम है। अलका जी ने अपने उपन्यासों में इस समस्याओं की ओर संकेत किया है।उपन्यास 'कलि-कथा वाया बाइपास' में एक काल्पनिक स्थिति के द्वारा इसके भयावह परिणामों को चित्रित

किया है। इसी प्रकार का चित्रण 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में भी है।हम अपने आधुनिक जीवन चर्या में व्यस्त होकर अपने आसपास की प्रकृति की सुंदरता को अनुभव नहीं कर पाते।इस प्रकार की परिस्थितियों को 'शेष कादंबरी' उपन्यास में रूबी दी ने अभिव्यक्ति दी है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप सर्वाधिक आघात मनुष्य के आपसी रिश्तों पर लगा है। रिश्तो में अजनबीपन,दूरी,ऊष्माहीनता आती जा रही है।बाजारवाद और उपभोक्तावाद ने मनुष्य की संवेदनशीलता को क्षीण कर दिया है। उपभोक्तावादी संस्कृति का मूल मंत्र यही है कि सादगी,सरलता जीवनदर्शन के मूल्य नहीं रहे बल्कि ये हीन भावना की ग्रंथि पैदा करते हैंह इस संस्कृति में त्याग, संयम,सहयोग जैसे पारंपरिक मूल्यों का अब कोई महत्व नहीं रह गया है। अलका जी ने अपने उपन्यासों में कई स्थानों पर इसका चित्रण किया है।'कलिं कथा: बाइ पास' के किशोर बाबू अपने निर्धन चचेरे भाई को धन की आवश्यकता पड़ने पर धन देने के लिए और आश्रय के लिए की आए वृद्ध मंझले मामा को ठहराने के लिए बहाना बना कर मना कर देते हैं। उपन्यास 'शेष कादंबरी' में मुख्य पात्र विधवा रूबी दी अपनी वृद्धावस्था में दो बेटियाँ होने के बावजूद अपने नौकर- चाकर पर निर्भर रहने के लिए विवश हैं।उनके धन, रूप-रंग और जीवन शैली ने उन्हें अपनी बेटियों से दूर कर दिया," गौरी ने एक दिन अचानक कहा-"तुमने मुझे कभी प्रेम ही नहीं किया क्योंकि मैं पापा की तरह सांवली थी। मुझे मां का प्रेम नहीं मिला। रूबी जी ने इस आक्षेप से तिलमिला कर कहा था," तुम्हें तो सिर्फ मां का प्रेम नहीं मिला। मुझे तो न मां का प्रेम मिल न बेटी का।"[6] 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास के पात्र रंगनाथन और भट्ट की भी यही कथा है। रंगनाथन की पत्रकार बेटी को स्टोरी के लिए जयपुर में गड्ढे में गिरे बच्चे की चिंता है,जिसकी खबर वह चौबीस घंटे टीवी पर चिल्ला चिल्ला कर दे रही है,परंतु निमोनिया से पीड़ित अपनी बीमार मां को देखने का उसके पास समय नहीं है। इसी प्रकार उपन्यास के तीसरे मुख्य पात्र भट्ट को नौकरी में मिली असफलता के कारण स्वयं को हमेशा अपने पिता और पुत्र से दूर अनुभव किया," वह कौन सी चीज है जिसने मुझसे मेरा पिता छीन लिया था?xxx वह बाजार से इस तरह बाहर निकला था जैसे उसे लग हो कि वहां अमन के अपहरण किए जाने का खतरा हो।xxxअमन उनसे जिस तरह घुल मिलकर जिन चीजों के बारे में बातें कर रहा था भट्ट को लगा कि वह किसी और का बेटा है।... "[7]भूमंडलीकृत संस्कृति में किस प्रकार से रिश्तो का आधार आर्थिक सफलता पर निर्भर करने लगा,भट्ट जैसे पात्र इसके सशक्त उदाहरण बनते हैं।

वर्तमान में समय और परिस्थितियों के अनुसार लोगों ने रहन-सहन, खान-पान और अपने जीवन शैली को भी बदला और नैतिकता के आचरण को भी चुनौती दी।दांपत्येतर संबंध, सहजीवन, समलैंगिक विवाह, जैसी बातें समाज कुछ लोगों द्वारा व्यवहार में लाया जाने लगा है।अलका जी के उपन्यास साहित्य में भी इस प्रकार के संबंधों की ओर ध्यान दिलाने का प्रयास किया गया है जैसे 'शेष कादंबरी' उपन्यास में रूबी जी की नातिन कादंबरी दिल्ली में अपने सहजीवन मित्र के साथ ही रहती है । इसी प्रकार 'एक ब्रेक के बाद' 'उपन्यास में गुरुचरण की कई विवाहित महिला मित्र थीं(पृष्ठ 40,100)।स्त्री मुक्ति से जुड़े कुछ प्रश्न किस प्रकार से परिवार नामक संस्था को प्रभावित करते है,इसके कारणों को तलाशने का प्रयास उपन्यासों में किया गया है। उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों में इस प्रकार के संबंधों को मुख्य कथा न बनाकर प्रसंगवश चित्रित अवश्य किया है।

भूमंडलीकृत बाज़ारी संस्कृति के समय में खराब,कुरूप, दोषपूर्ण सामान की मांग नहीं होती है, अपितु बाजार को तो हर एक चीज में परफेक्शन चाहिए होता है- मनुष्य में भी। 'सेरेब्रल पैलसी' से पीड़ित 'कोई बात नहीं' उपन्यास के मुख्य पात्र शशांक शारीरिक रूप से असक्षम है।शशांक और उसकी मां की यही त्रासदी है कि वे समाज के आगे अपने सामर्थ्य को सिद्ध करने में दिन रात जूझते रहते हैं। अलका जी का यह उपन्यास वर्तमान समाज की उस मानसिकता का चित्रण करता है जहां मनुष्य का मोल उसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है। सदी के अंतिम दशक की पृष्ठभूमि पर आधारित 'कुलभूषण का नाम दर्ज किजिए' उपन्यास की कथा के केंद्र में बांग्लादेश के निर्माण, विस्थापन और सांप्रदायिक हिंसा की कथा है। उपन्यास के मुख्य पात्र कुलभूषण को अपने कुरूप और निर्धन होने के कारण पहला विस्थापन अपने परिवार से और दूसरा अपने गांव कुष्टिया से मिलता है।अपने परिवार से जिस प्रेम,ममता,स्नेह,सहानुभूति,सहारे की अपेक्षा उसने की,उसे वह परिवार के बाहर मुस्लिम मित्र श्यामा धोबी और अनिल मुखर्जी से मिला। रूप और धन के अभाव में मनुष्य को अपमान,तिरस्कार सहना पड़ता था परंतु भूमंडलीकरण की सौंदर्यप्रेमी संस्कृति ने इस मानसिकता को और बढ़ावा दिया। इसी कारण आजकल बनावटी-सौंदर्यकरण की मांग और तरह-तरह के नए फैशन के अनुरूप बाजार में वस्तुओं की उपलब्धता है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने उपभोक्तावाद,बाजारवाद को प्रोत्साहन देने के लिए ऋण की आवश्यकता,अनिवार्यता और सुविधा उपलब्ध कराई। भारतीय समाज जहां पर ऋण लेना श्रेयकर नहीं समझा जाता था,अब वहीं समाज में पूरी एक पीढ़ी कर्ज़ के बोझ तले दबी नजर आती है।आधुनिक से अत्याधुनिक दिखने की होड़ में लोग अंधाधुन ऋण ले रहे हैं।ऋण की अदायगी की असमर्थता उन्हें तनाव और डिप्रेशन जैसी स्थिति उत्पन्न कर देती है।हमारी बचत करने की परंपरागत आदत समाप्त होती जा रही है।आज के मनुष्य को इस बात का एहसास है कि वह एक विश्व ग्राम का वासी है।उसे अपने रखरखाव और प्रदर्शन में अच्छा पैसा खर्च करना चाहिए। बाजार में उपलब्ध एक से एक महंगी और आधुनिक वस्तुओं का विज्ञापन जहां उन्हें इन चीजों को खरीदने के लिए प्रेरित करता है, वहीं बैंको और वित्तीय संस्थाओं द्वारा ऋण लेने की सुविधाओं से जुड़ी तरह-तरह योजनाएं भी उपलब्ध रहती हैं।उपभोक्तावाद साधारण से ससाधारण व्यक्ति को इस बात के लिए प्रेरित करता है कि खरीदने की ताकत नहीं है तो ऋण(लोन),क्रेडिट कार्ड,फाइनेंस जैसी सुविधाएं तो उपलब्ध है।उपन्यास 'कलि-कथा:वाया बाइपास' के किशोर बाबू ऋण(लोन) लेकर महंगी गाड़ी खरीदने के बेटे के शौक को देखकर बौखला जाते हैं। यह बात उनकी समझ से परे है कि किस प्रकार से यह पीढ़ी महंगी वस्तुओं को खरीदने, ब्रांडेड कपड़े पहनने और महंगे से महंगे होटल -रेस्तरां में जाकर खाने जैसी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ऋण ले सकती है। किशोर बाबू ने अपने जीवन आदर्शों के अनुरूप ऋण लेने को श्रेयस्कर नहीं समझा और अपने को तिल तिल जलाकर पैसे कमाए,अपना साम्राज्य खड़ा किया,वह उधार की बात सोच भी नहीं सकते थे। इन्हीं की अगली पीढ़ी, किशोर बाबू के बेटे ने ऋण लेने की आवश्यकता पर तर्क देते हुए अपने अड़ोस-पड़ोस और रिश्तेदारों में हुई आत्महत्या के उदाहरण गिना दिए थे,"xxx देखते नहीं। कितने लोग कैसे-कैसे किसलिए आत्महत्या कर रहे हैं- कोई लड़की इसलिए ज़हर खा लेती है क्योंकि उसका बाप उसे माधुरी दीक्षित वाली घाघरा चोली नहीं ला देता-और अभी मेरे दोस्त अरुण की पत्नी ने आत्महत्या कर ली क्योंकि अरुण उसे अपनी शादी की सालगिरह पर 'ताज बंगाल' नहीं ले गया था 'सेलिब्रेट करने'। और कांता भाभी का तो सबको मालूम ही है-...।"[8] वर्तमान समाज में बढ़ते हुए उपभोक्तावाद का का प्रभाव यह है

कि दिखावे के लिए अपने सामर्थ्य से अधिक ऋण लेकर खर्च करते हैं। 'शेष कादंबरी' में रूबी दी जब अपने आसपास नई-नई चमचमाती गाडियां देखती हैं तो वह भी सोचने पर मजबूर हो जाती है कि पिछले दस सालों में लोगों के पास इतना अकूत पैसा कहां से आ गया। नई गाड़ियों की खरीद के लिए कंपनियों और बैंकों द्वारा ऋण-कर्ज शब्द हटा के 'फाइनेंस' और 'लोन' जैसे शब्दों से लोगों को लुभाया जाने लगा है। ऋण या लोन की सुविधा का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह है कि इसने तनाव और डिप्रेशन जैसी बीमारियों को जन्म दिया है जिसके कारण समाज में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।उपभोक्तावाद,बाज़ारवाद,प्रदर्शनवाद की प्रवृति ने मनुष्य में संतोष को समाप्त कर असंतोष की परिस्थितियों में वृद्धि की।वह थोड़े में संतुष्ट नहीं है, बल्कि दूसरों से ईष्या करके अपने आप को तनाव में डाल लेता है और अंततः आत्महत्या की ओर उ'न्मुख होता है।'कलि-कथा:वायाबाइपास',शेष कादंबरी','एक ब्रेक के बाद','जानकीदास तेजपाल मैनशन','कुलभूषण का नाम दर्ज' कीजिए उपन्यासों में आत्महत्या जैसी समस्याओं को चित्रित कर इसके पीछे के कुछ कारणों को उजागर करने की कोशिश की गई है।

भारतीय समाज में भूमंडलीकरण के संदर्भ अमेरिकीकरण के प्रभाव को अधिक ग्रहण किया गया।अमेरिकी संस्कृति का प्रसार जिस प्रकार से जन सामान्य पर हो रहा है उसका गहराई से चित्रण 'जानकीदास तेजपाल मेंशन' उपन्यास में है।उपन्यास का नायक जयगोविंद अमेरिका रिटर्न होने के कारण लगभग प्रतिदिन उसके सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों से दो-चार होता है। जयगोविंद भली-भांति यह जानता है कि किस प्रकार अमेरिकन शैली में अंग्रेजी भाषा बोलकर वह अपने कार्य क्षेत्र में धाक जमा सकता है।उपन्यास में जगह-जगह लेखिका ने इस भारतीय मानसिकता को दर्शाया है । जयगोविंद भी अमेरिका में ही बसना चाहता था परंतु यह संभव नहीं हो पाया। उसका बेटा अमेरिका गया तो वापस आने की इच्छा नहीं रखता। उसे भारत एक 'चिड़ियाघर' की तरह नजर आता है जहां प्रदूषण और इन्फेक्शन बहुत हैं। उपन्यास की कथा का आरंभ मेट्रो बनाने के लिए 'जानकीदास तेजपाल मेंशन' के तोड़े जाने की कवायद से होता है।उपन्यास में भूमंडलीकरण के फलस्वरुप पुरानी इमारतों को तोड़कर मॉल संस्कृति के लिए नए-नए बहुमंजिला इमारत और मॉल सेंटर बनाने की कवायद के साथ-साथ भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण के विभिन्न प्रभावों की कथा भी है।इसी कारण उपन्यास की कथा में जमीनों की कीमतों में उछाल, शेयर बाजार के घोटाले, स्थानीय गुंडो की राजनीति,भ्रष्टाचार और जुगाड़ की मानसिकता आदि का चित्रण है। उपन्यास में सत्तर के दशक से इक्कीसवीं सदी के आरंभ के दस वर्षों तक के समय में समाज में आ रहे बदलावों को लेखिका ने बेहद सटीक ढंग से उजागर किया है। भूमंडलीकरण की उपभोक्तावाद और बाजारवाद में उत्पादों के साथ-साथ सेवाओं के क्रय-विक्रय का व्यापार शुरू किया और उसने जिस प्रकार से कार्य-पद्धति और जीवन शैली को प्रभावित किया उसका चित्रण उपन्यास में बहुत ही रोचक ढंग से हुआ है यथा ," पूरी दुनिया में रुपए का बाजार दिन रात चल रहा है।अमेरिका के रुपए हांगकांग में किसी के काम आने वाले हैं और जापान में किसी सौदे में उन्हीं रुपयों से बड़ी रकम का फायदा हो सकता है।"बस सोना यानी की नींद ही मेरे लिए एक ऐसी महंगी कमोडिटी है जिसे मैं खरीद नहीं सकता रोहित कहता है। जय गोविंद सोचता है कि एडवोकेट बाबू यह बात सुनते तो क्या कहते नींद को डॉलर में बदल डाला तुमने?"[9] भूमंडलीकरण के फलस्वरुप पूंजी और निवेश का वर्चस्व ही महत्वपूर्ण हो गया है।

सोशल मीडिया भूमंडलीकरण के समय में संवाद का वह माध्यम है जिसने भौगोलिक दूरी को एक इतिहास बना दिया है। कंप्यूटर और मोबाइल पर उपलब्ध इंटरनेट की सुविधा ने सूचनाओं का एक विस्फोट कर दिया है। जनसंचार के ये माध्यम रात-दिन की सीमा के पार 24x365 विचार-विमर्श,संवाद वार्तालाप,आदि के लिए उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध हैं।अलका जी का उपन्यास 'एक सच्ची-झूठी गाथा' की कथा,संचार के इसी एक माध्यम ईमेल चैटिंग पर आधारित है। वर्तमान समय में उन्नत टेक्नोलॉजी का सबसे बड़ा हानिकारक पहलू यह है कि हमें स्क्रीन की दूसरी तरफ बैठे व्यक्ति की वास्तविकता के बारे में बहुत कोशिशों के बाद भी प्रमाणिक जानकारी हासिल करना संभव नहीं है। लेखिका ने इसी समस्या को उपन्यास में उजागर करने के साथ-साथ उपभोक्ताओं को सजग और सतर्क रहने का पाठ भी पढ़ाया।उपन्यास की नायिका नायिका गाथा उम्रदराज स्त्री है।यदि वह एक जागरूक लेखिका नहीं होती तो वह बहुत बड़े संकट में पड़ सकती थी," गाथा पूरी बोतल गटा गट पी जाती है। उसका मुंह सूख गया है और जीभ जैसे काठ की हो गई है। सचमुच मुहावरे ऐसे ही नहीं बनते उसके पैरों के तलवों से भय की लहरें ऊपर उठ रही हैं।अगर वह खड़ी हो जाए तो शायद गिर पड़ेगीxxx मेरा नाम प्रमित ही है। बाकी पहचान मैंने उसे प्रमित साहा से ले ली थी, जो तुम्हारे साथ बैठा था दिल्ली जाते हुए। मैं कहीं पढ़ता नहीं हूं ना कवियों के सम्मेलन में जाता हूं।"[10]आभासी जगत के कटु यथार्थ को उधेड़ता ,यह उपन्यास अपने विषयवस्तु के रूप से आज के समय के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षत: अलका जी के उपन्यास साहित्य भूमंडलीकरण के दौर के प्रत्येक पक्ष के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने की क्षमता रखता है। भूमंडलीकरण ने विज्ञापनों,ब्रांड-नेम,मा ॅल संस्कृति आदि से भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप को प्रभावित कर उसे बाज़ारी, भोगवादी,आत्मकेंद्रित जीवनदृष्टि के लिए प्रेरित कर दिया है।अलका जी के उपन्यास इसके दस्तावेज बने हैं। सूचना और संचार क्रांति के द्वारा भूमंडलीकृत भारत में मुनाफे की शक्ति जिस तरह से खेत-खलियान, जंगल,जमीन, स्त्री, धर्म ,सत्य आदि का उपयोग कर रहे हैं,उसके विभिन्न सकारात्मक-नकारात्मक पहलुओं की गूंज हमें अलका जी के साहित्य में स्पष्ट सुनाई देती हैं।

संदर्भ

[1] भारत का भूमंडलीकरण-सं. अभय कुमार दुबे
[2] कलि-कथा :वाया बाईपास - अलका सरावगी, पृष्ठ 150
[3] एक ब्रेक के बाद- पृष्ठ 148
[4] वही पृष्ठ 117
[5] वही पृष्ठ 170
[6] शेष कादंबरी - पृष्ठ 108
[7] एक ब्रेक के बाद-पृष्ठ 178
[8] कलि-कथा: वाया बाईपास ,पृष्ठ 214
[9] जानकीदास तेजपाल मैनशन ,पृष्ठ 130
[10] एक सच्ची-झूठी गाथा ,पृष्ठ 79